भारत में निवेश का परिदृश्य

निवेश को किसी देश की संवृद्धि और विकास का मार्ग तय करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक माना जाता है। लगभग 1.4 बिलियन की आबादी और 3.2 ट्रिलियन डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) वाला भारत, विश्व की सबसे तेज संवृद्धि दर वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। इसके साथ ही भारत घरेलू और विदेशी, दोनों तरह के निवेशकों के लिए एक अनुकूल माहौल प्रदान करता है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुमानों के अनुसार, भारत 2027 तक जापान और जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की GDP के साथ विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

इस डॉक्यूमेंट में हम निम्नलिखित पर चर्चा करेंगे:

1. किसी अर्थव्यवस्था में निवेश से आप क्या समझते हैं? 2.
   1.1 निवेश के अलग-अलग रूप कौन-से हैं? 2.
2. भारत, निवेश के लिए पसंदीदा गंतव्य (देश) क्यों है? 3.
3. भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था पर निवेश का क्या प्रभाव पड़ता है? 4.
4. निवेश को आकर्षित करने के लिए क्या उपाय किए गए हैं? 6.
5. भारत में निवेश आकर्षित करने में कौन-कौन सी चुनौतियां मौजूद हैं? 9.
6. निवेश आकर्षित करने में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए कौन-कौन से उपाय किए जा सकते हैं? 9.
7. निष्कर्ष 10.
8. टॉपिक एक नज़र में 11.
9. चित्र, बॉक्स और टेबल 12.

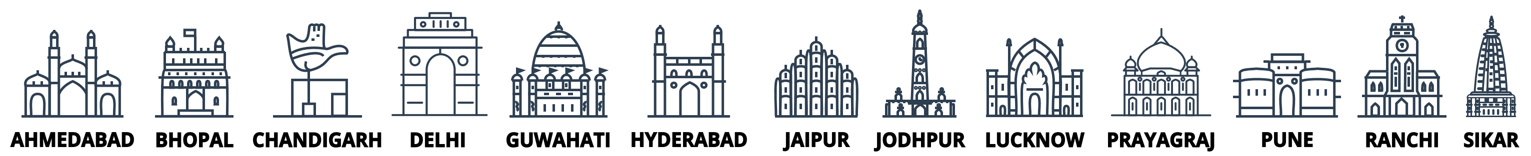

1. किसी अर्थव्यवस्था में निवेश से आप क्या समझते हैं?

नई पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण पर हुए व्यय को निवेश कहा जाता है। इस तरह की पूंजीगत परिसंपत्तियों में भवन, मशीनरी, कच्चा माल, उपकरण आदि शामिल हैं। **इन परिसंपत्तियों पर व्यय करने से अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता में वृद्धि** होती है। निवेश व्यय को **प्रेरित निवेश (Induced Investment)** और **स्वायत्त निवेश (Autonomous Investment)** में वर्गीकृत किया जाता है (बॉक्स 1.1 देखें)।

निवेश **व्यापक आर्थिक परिदृश्य से संबंधित निम्नलिखित छह भूमिकाएं** निभाता है:

1. यह **पूंजीगत वस्तुओं की मौजूदा मांग में वृद्धि में योगदान देता** है। इस प्रकार यह घरेलू व्यय को बढ़ाता है।
2. यह **उत्पादन आधार (स्थापित पूंजीगत क्षमता) को बढ़ाता** है। इससे उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।
3. यह **उत्पादन प्रक्रियाओं को आधुनिक बनाता** है। इससे लागत में भी कमी आती है।
4. यह प्रति यूनिट उत्पादन में **आवश्यक श्रम को कम करता** है। इस तरह से यह **उच्च उत्पादक क्षमता** सुनिश्चित करता है।
5. **नए और गुणवत्ता वाले उत्पादों के उत्पादन को बढ़ावा** देता है। इससे उत्पादन में मूल्य वर्धन (वैल्यू ऐड) होता है।
6. यह **अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सर्वश्रेष्ठ नवाचारों और गुणवत्ता मानकों को** उत्पादन प्रक्रिया में **शामिल** करता है। इससे विकसित और विकासशील देशों के बीच अंतराल यानी गैप कम होता है और निर्यात बढ़ाने में मदद मिलती है। साथ ही, इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होती है।

बॉक्स 1.1 प्रेरित निवेश और स्वायत्त निवेश के बीच अंतर

प्रेरित निवेश (Induced Investment)	आधार	स्वायत्त निवेश (Autonomous Investment)
लाभ कमाने के उद्देश्य से किया गया निवेश **"प्रेरित निवेश"** कहलाता है।	उद्देश्य	निवेश से होने वाली आय के बारे में न सोचकर किए गए निवेश को **"स्वायत्त निवेश"** कहा जाता है।
इस तरह के निवेश सामान्यतः निजी क्षेत्रक में किए जाते हैं।	क्षेत्रक	इस तरह के निवेश सामान्यतः सरकारी क्षेत्रक में किए जाते हैं।
यह निवेश आय के संबंध में परिवर्तनशील या लोचशील होता है। यदि राष्ट्रीय आय बढ़ती है, तो प्रेरित निवेश भी बढ़ता है। इसका कारण यह है कि राष्ट्रीय आय में वृद्धि से वस्तुओं तथा सेवाओं की मांग में भी वृद्धि होती है, और इन मांगों को पूरा करने के लिए निवेश भी बढ़ाया जाता है।	परिवर्तनशील आय	यह आय के संबंध में अपरिवर्तनशील होता है, अर्थात्, यह आय स्तर में परिवर्तन से प्रभावित नहीं होता है। स्वायत्त निवेश की मात्रा आय के सभी स्तरों पर समान होती है।
इसका वक्र ऊपर की ओर प्रवणता (अपवर्ड स्लोपिंग) वाली सीधी रेखा जैसा होता है। 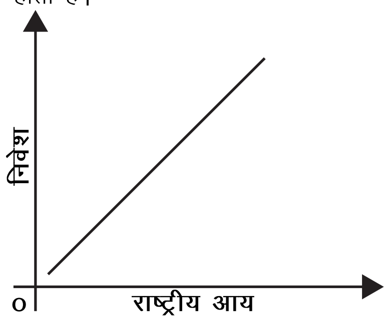	वक्र / कर्व	इसका वक्र क्षैतिज अक्ष के समानान्तर एक सीधी रेखा में होता है। 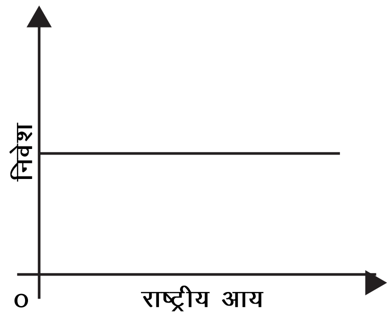

1.1. निवेश के अलग-अलग रूप कौन-से हैं?

निवेश अलग-अलग रूपों में किए जा सकते हैं। निवेश को उनके स्वरूप, संरचना और अंडरलाइंग एसेट्स के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। इनमें **फिक्स्ड रेट, मार्केट लिंक्ड और वैकल्पिक निवेश इंस्ट्रूमेंट्स (यानी साधन)** शामिल हैं।

- **फिक्स्ड रेट निवेश इंस्ट्रूमेंट्स**
  - **बॉण्ड्स:** यह एक निश्चित आय आधारित निवेश साधन है। इसमें निश्चित ब्याज दर पर यील्ड के रूप में रिटर्न प्राप्त होता है।
  - **सार्वजनिक भविष्य निधि (पब्लिक प्रोविडेंट फंड):** इसके तहत जमा राशि अर्थात् मूल निवेश पर सरकार द्वारा ब्याज का भुगतान किया जाता है।
- **मार्केट लिंक्ड निवेश इंस्ट्रूमेंट्स**
  - **स्टॉक:** यह किसी कंपनी की इक्विटी खरीदकर किया गया निवेश है।
  - **म्यूचुअल फंड:** इसमें कई निवेशकों से पूंजी जुटाई जाती है। फिर इस पूंजी का इक्विटी, ऋण प्रतिभूतियों (डेट सिक्योरिटीज), वेंचर कैपिटल जैसे अलग-अलग वित्तीय उत्पादों या साधनों में निवेश किया जाता है।
  - **राष्ट्रीय पेंशन योजना:** इसमें कई निवेशकों से फंड या धनराशि जुटाई जाती है, फिर उस कार्पस या एकत्रित धनराशि का अलग-अलग इक्विटी और ऋण प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता है।

- वैकल्पिक निवेश इंस्ट्रूमेंट्स

वैकल्पिक निवेश के मुख्य प्रकार

प्रकार	वैकल्पिक निवेश
वस्तुएं (कमोडिटी)	**भौतिक वस्तुएं और प्राकृतिक संसाधनः** खाद्य पदार्थ, बहुमूल्य और औद्योगिक धातुएं, तेल और प्राकृतिक गैस।
संग्रहणीय वस्तुएं (Collectibles)	**इनमें मूर्त वस्तुएं (Tangible items) शामिल हैं जिनका मूल्य समय के साथ बढ़ सकता है। ये हैं;** कला और प्राचीन वस्तुएं (आर्ट एंड एंटीक), आभूषण, सिक्के और स्टाम्प, विंटेज वाइन, किताबें।
रियल एस्टेट	भौतिक संपत्ति और भूखंड।
निजी इक्विटी	**इनमें ऐसे इंस्ट्रूमेंट्स शामिल होते हैं जिनका सार्वजनिक रूप से कारोबार नहीं किया जाता है,** जैसे– लिमिटेड पार्टनरशिप, निजी कंपनी के स्टॉक या ऋण, हेज फंड्स।
डेरिवेटिव्स	यह दो पक्षों के बीच होने वाला एक प्रकार का अनुबंध (कॉन्ट्रैक्ट) है। यह अनुबंध अंतर्निहित परिसंपत्ति (अंडरलाइंग एसेट्स) के बदलते मूल्य या भविष्य के मूल्य के बारे में अनुमान है। इसके उदाहरण हैं; ऑप्शन कॉन्ट्रैक्ट्स, वायदा या फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट्स, स्वैप।

निवेश इकोसिस्टम

हाल के वर्षों में, भारत निवेश और कारोबार करने के मामले में सबसे आकर्षक गंतव्य के रूप में उभरा है।

2. भारत, निवेश के लिए पसंदीदा गंतव्य (देश) क्यों है?

भारत घरेलू और विदेशी, दोनों तरह के निवेश के लिए विकासशील तथा अनुकूल माहौल प्रदान करता है। निम्नलिखित वजहों से भारत निवेश के लिए आकर्षक गंतव्य देश बना हुआ है:

- **आर्थिक संवृद्धिः अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक** सहित कई वैश्विक संगठनों ने अनुमान लगाया है कि **भारत 2023–24 में सबसे तेजी से वृद्धि करने वाली अर्थव्यवस्था होगी।** वहीं दूसरी ओर, संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाएं वैश्विक आर्थिक मंदी (स्लोडाउन) के दबाव में संकुचित हो रही हैं।
- **भारत की भौगोलिक अवस्थितिः** भारत सामरिक रूप से महत्वपूर्ण व्यापार मार्गों **(मलक्का जलडमरूमध्य, होर्मुज) के केंद्र में अवस्थित है।** साथ ही **दक्षिण–पूर्व एशिया और मध्य–पूर्व के बाजार भारत से नजदीक हैं।** भारत की यह सामरिक अवस्थिति वैश्विक बाजारों के साथ बेहतर कनेक्टिविटी सुनिश्चित करती है। इन वजहों से विविध और विस्तारित व्यापार नेटवर्क तक पहुंच की चाह रखने वाले **अंतर्राष्ट्रीय निवेशक भारत का रुख करते हैं।**
- **कुशल कार्यबलः** भारत में **कुशल तथा शिक्षित पेशेवरों का विशाल एवं व्यापक समूह** मौजूद है, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और विज्ञान जैसे क्षेत्रकों में। यह कुशल कार्यबल बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) और प्रतिभा की तलाश कर रहे निवेशकों को भारत की ओर खींचता है।
- **निवेशक अनुकूल नीतिः** भारत सरकार की कई पहलों से कारोबारी माहौल में सुधार हुआ है। इन पहलों में सिंगल विंडो क्लीयरेंस, उदार एंट्री और एग्जिट नीति तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) मानदंडों को सरल करना शामिल हैं। इन पहलों से आगे भी भारत में निवेश बढ़ता रहेगा।
- **अवसंरचना संबंधी विकासः** भारत सरकार **अवसंरचना विकास** (जैसे– राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन) **में निवेश** बढ़ा रही है। इनमें **परिवहन** (राष्ट्रीय जलमार्ग और मल्टी–मॉडल कनेक्टिविटी), **ऊर्जा और लॉजिस्टिक्स** विकास भी **शामिल** हैं। बेहतर अवसंरचना **परिचालन लागत को कम कर सकती है और समग्र कारोबारी** माहौल में सुधार ला **सकती** है।
- **ग्लोबल ऑफशोरिंगः** इंटरनेट युग के आगमन के बाद से वैश्विक कंपनियां **सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, कस्टमर सर्विस जैसी सेवाएं भारत को आउटसोर्स कर दे रही हैं।** डिस्ट्रिब्यूटेड वर्क मॉडल के आने से वैश्विक कंपनियां भारत में अपने बैंकों की शाखाएं एवं अन्य ऑफिस खोल रही हैं।
  - आने वाले दशक में, भारत में विदेशी कंपनियों के लिए कार्य करने वाले लोगों की संख्या कम–से–कम दोगुनी हो सकती है। एक अनुमान के अनुसार यह संख्या 2030 तक 11 मिलियन से अधिक हो जाएगी।

- **राजनीतिक स्थिरता:** भारत को एक स्थिर **लोकतांत्रिक देश माना जाता** है। साथ ही, इसकी **राजनीतिक व्यवस्था ने पिछले कई वर्षों में संकटों और अस्थिरता से निपटने की बेहतर क्षमता प्रदर्शित की** है। केंद्र में स्थिर सरकार, द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों और समझौतों में वृद्धि तथा **G–20 सम्मेलन को सफलतापूर्वक आयोजित करने से निवेश के लिए बेहतर माहौल** तैयार हुआ है।
- **विनिर्माण में निवेश: कॉर्पोरेट कर में कटौती, निवेश के लिए प्रोत्साहन योजनाएं और अवसंरचना पर खर्च में वृद्धि** की वजहों से भारत "विश्व का कारखाना (factory to the world)" बनने की राह पर अग्रसर है। इससे विनिर्माण में पूंजी निवेश को बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।
    - मॉर्गन स्टेनली की एक रिपोर्ट के अनुसार, **भारत के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण की हिस्सेदारी मौजूदा 15.6% से बढ़कर 2031 तक 21% तक हो जाने की संभावना है।**
- **एनर्जी ट्रांजिशन:** भारत में ऊर्जा की खपत बढ़ रही है। साथ ही ऊर्जा खपत में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की हिस्सेदारी भी बढ़ रही है। भारत सरकार ने **2030 तक नवीकरणीय स्रोतों से 500GW की स्थापित विद्युत् क्षमता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है। इससे भारत में निवेश के लिए एक नया सेगमेंट** उभरा है।
    - **ग्रीन हाइड्रोजन मिशन जैसी स्वच्छ ऊर्जा पहल** के प्रति भारत की प्रतिबद्धता उन इच्छुक **निवेशकों को आकर्षित** कर सकती है, जो भारत में विकास कर रहे और पर्यावरण के प्रति सचेत ऊर्जा क्षेत्रक में साझेदार बनना चाहते हैं।
- **उपभोक्ता बाज़ार:** भारत सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। विशाल आबादी भारत को विश्व के **सबसे बड़े उपभोक्ता बाज़ारों में से एक** बनाता है। इसके अलावा, बड़ा और तेजी से बढ़ता मध्यम वर्ग तथा आबादी की विविधता भी बढ़ते उपभोक्ता आधार (बेस) का लाभ उठाने के लिए निवेशकों के समक्ष महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है।
- **जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend):** भारत में विश्व की **सर्वाधिक युवा आबादी** रहती है। भारत की लगभग 66 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु के युवाओं की है। यह जनसांख्यिकीय लाभांश **विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने का एक प्रमुख** साधन है। इसके अलावा, यह जनसांख्यिकीय लाभांश **मजबूत कार्यबल, आर्थिक संवृद्धि और उत्पादकता** बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **प्राकृतिक संसाधन:** भारत **विविध प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न देश है।** इनमें **उपजाऊ जलोढ़ मैदान, खनिज संसाधन समृद्ध छोटा नागपुर का पठार** शामिल हैं। ये संसाधन निवेश आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संसाधन **कृषि, खनन जैसे उद्योगों का समर्थन** करते हैं और **सतत विकास और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश के अवसर** प्रदान करते हैं। इससे भारत कई समूहों के निवेशकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बन गया है।

3. भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था पर निवेश का क्या प्रभाव पड़ता है?

विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में विकासशील देशों में निवेश की आवश्यकता अधिक है क्योंकि यह भारत जैसे विकासशील देशों के आर्थिक परिदृश्य को दिशा देने के लिए महत्वपूर्ण है। गौरतलब है कि भारत 2047 तक विकसित देश बनने की आकांक्षा रखता है जिसके पूरा होने में निवेश की बड़ी भूमिका होगी। मजबूत घरेलू मांग, निवेश बढ़ाने के लिए सरकार के गंभीर प्रयास जैसे कारकों ने पिछले दो दशकों में उच्च संवृद्धि दर बनाए रखने में मदद की है।

- **विकास और राजस्व स्रोत:** निवेश से व्यापक आर्थिक परिदृश्य को प्रोत्साहन प्राप्त होता है। साथ ही, यह **कुल कारक उत्पादकता** (निवेश की तुलना में उत्पादन), **रोजगार तथा संसाधन उपयोग की दक्षता को बढ़ाकर** विकास को गति प्रदान करता है। सफल निवेश से **आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होती है,** जिससे सरकार को **अधिक कर राजस्व प्राप्त होता** है।
- **प्रौद्योगिकी का भारत में आना:** निवेश विकसित देशों से विकासशील देशों में नई प्रौद्योगिकियां भी लाता है। ये प्रौद्योगिकियां **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, विदेशी लाइसेंस, संयुक्त उद्यम** आदि के माध्यम से आती हैं। विदेशी प्रौद्योगिकी सहयोग किसी भी **विकासशील अर्थव्यवस्था में प्रौद्योगिकी की कमियों को दूर करने,** विकास को बढ़ावा देने, उत्पादन को सुव्यवस्थित करने आदि के लिए एक प्रभावी साधन के रूप में कार्य करता है।
    - उदाहरण के लिए, **ब्राजील ने भी भारत के साथ प्रौद्योगिकी साझा करना** शुरू कर दिया है ताकि भारत **2025–26 तक पेट्रोल के लिए 20 प्रतिशत इथेनॉल सम्मिश्रण (ब्लेंडिंग)** का लक्ष्य हासिल कर सके। इससे पशुधन और पोल्ट्री क्षेत्रक में उत्पादकता में सुधार होगा।
- **प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना:** निवेश, **बाजार में नए भागीदारों/ उद्यमों की संवृद्धि** को बढ़ावा देता है और घरेलू प्रतिस्पर्धा को भी प्रेरित करता है। इससे अंततः उत्पादकता बढ़ाने में और उत्पाद का मूल्य कम बनाए रखने में मदद मिलती है।
    - 1991 और 2012 के बीच, **भारत में संचालित बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) की संख्या चार गुना बढ़ गई है** और पिछले दशक में FDI में लगातार वृद्धि हुई है। कोविड महामारी के बावजूद भी **वित्त वर्ष 2022 में भारत को 84.8 बिलियन डॉलर का FDI** प्राप्त हुआ था।
- **एकीकरण और व्यापार:** निवेश, विदेशी व्यापार को बढ़ावा देकर वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण में मदद करता है। निवेश से **देशों के भुगतान संतुलन में भी सुधार** होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि निवेश से निर्यात के अवसर बढ़ते हैं, आयात को कम करने में मदद मिलती है और विदेशी पूंजी के बाहर जाने को कम करने में मदद मिलती है।
- **अवसंरचना संबंधी विकास:** निवेश से अक्सर **परिवहन नेटवर्क, ऊर्जा सुविधाओं और संचार प्रणालियों** सहित अवसंरचना के निर्माण और सुधार करने में सहायता मिलती है। इससे उत्पादकता बढ़ती है, लेन–देन की लागत कम होती हैं, और भविष्य में निवेश आकर्षित करने के लिए माहौल तैयार होता है।
- **विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि:** विदेशी निवेश से किसी देश के विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि हो सकती है। गौरतलब है कि यह भंडार **आर्थिक अनिश्चितताओं और संकट की स्थिति में सुरक्षा** प्रदान करता है। साथ ही इसका उपयोग अन्य विदेशी मुद्राओं की तुलना में राष्ट्रीय मुद्रा की विनिमय दर को स्थिर रखने के लिए किया जा सकता है। इससे अर्थव्यवस्था अधिक मजबूत हो जाती है।
- **जीवन स्तर में सुधार:** निवेश के बढ़ने से तथा इससे अर्थव्यवस्था में हो रही संवृद्धि के परिणामस्वरूप आम तौर पर आबादी के जीवन स्तर में सुधार होता है। इससे अधिक लोगों को **शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल तथा** अन्य आवश्यक सेवाएं प्राप्त हो पाती हैं।

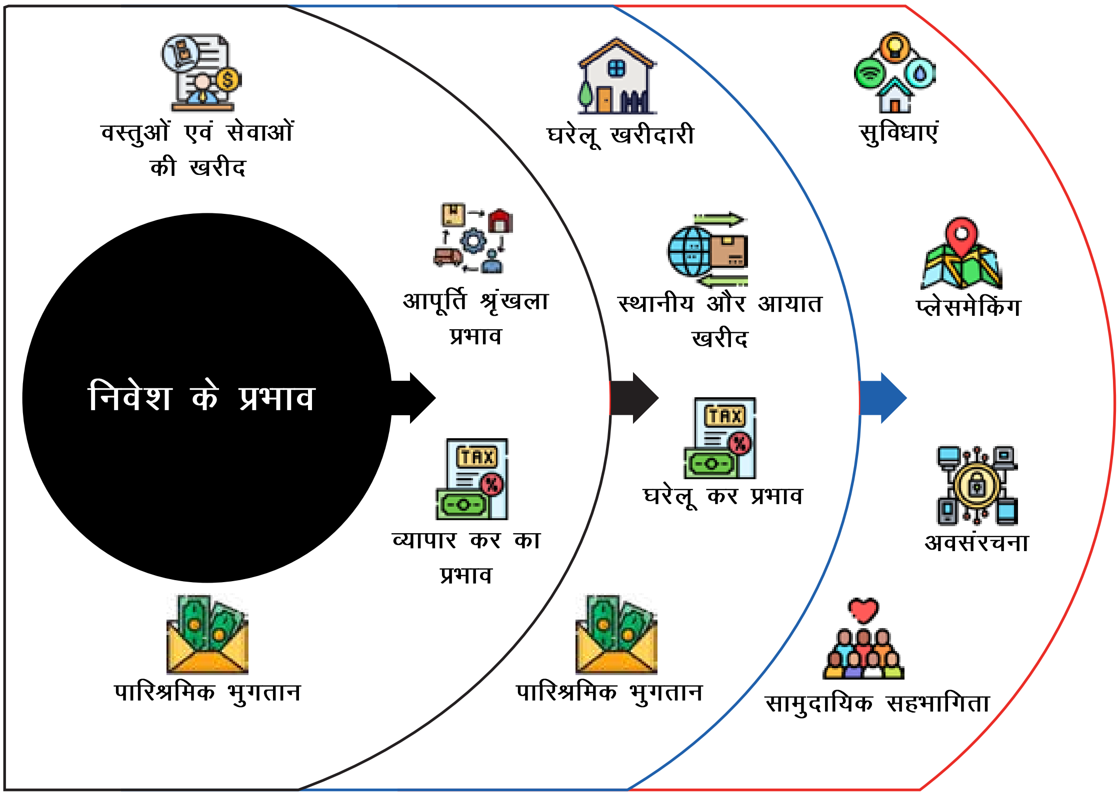

प्रत्यक्ष प्रभाव
आर्थिक गतिविधि के परिणामस्वरूप होने वाले प्रारंभिक परिवर्तन

अप्रत्यक्ष/ परोक्ष प्रभाव
उद्योग में प्रभाव के परिणामस्वरूप स्थानीय उद्योगों द्वारा अन्य स्थानीय उद्योगों से सामान और सेवाएं खरीदने का प्रभाव

प्रेरित प्रभाव
प्रारंभिक परिवर्तन के प्रति अर्थव्यवस्था की प्रतिक्रिया, जो वेतनभोगियों द्वारा प्राप्त आय के पुनर्व्यय के माध्यम से होती है।

सामाजिक प्रभाव
आर्थिक गतिविधि के परिणामस्वरूप समुदाय में होने वाले गुणात्मक प्रभाव

बॉक्स 3.1. एक छोटी सी वार्ता! इम्पैक्ट इंवेस्टमेंट या प्रभाव निवेश

विनी: अरे विनय, क्या तुमने कभी "इम्पैक्ट इंवेस्टमेंट" के बारे में विचार किया है?

विनय: बिलकुल नहीं! यह किस विषय से संबंधित है?

विनी: यह उन निवेश इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश से संबंधित है जो एक मापनीय और लाभकारी सामाजिक या पर्यावरणीय प्रभाव उत्पन्न करता है, साथ ही उस वित्तीय निवेश पर लाभ यानी रिटर्न भी प्रदान करता है।

विनय: क्या आप इसका कोई उदाहरण दे सकती हैं?

विनी: हाँ। उदाहरण के लिए, मुंबई कूरियर कंपनी श्रवण–बाधित युवाओं को रोजगार प्रदान करती है, अन्य के लिए रोजगार के अवसर पैदा करती है, साथ ही यह लाभ अर्जित करने के लिए लॉजिस्टिक्स उद्योग के अवसरों का लाभ उठाती है।

विनय: यह तो दिलचस्प कॉन्सेप्ट है। मेरे ख्याल से, ग्लोबल इम्पैक्ट इन्वेस्टिंग नेटवर्क जैसे प्लेटफ़ॉर्म प्रभाव निवेश (इम्पैक्ट इन्वेस्टिंग) पर ध्यान केंद्रित करते हैं!

विनी: बिल्कुल सही। और हां, भारत में इसके प्रमुख फोकस क्षेत्र वित्तीय समावेशन, स्वास्थ्य देखभाल सेवा, स्वच्छ ऊर्जा, शिक्षा, लैंगिक समानता आदि हैं।

विनय: मैं इस पर गौर करूंगा। यह निवेश करने का एक सार्थक तरीका लगता है। अपने विचार साझा करने के लिए धन्यवाद, विनी!

विनय

विनी

4. निवेश को आकर्षित करने के लिए क्या उपाय किए गए हैं?

सरकार द्वारा निवेशक–अनुकूल व्यवस्था बनाने के लिए कई ठोस प्रयास किए गए हैं। ये उपाय घरेलू निवेशकों के साथ–साथ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का समर्थन करते हैं। इन प्रयासों के चलते अर्थव्यवस्था को कई गुणा बढ़ावा मिलेगा।

तालिका 4.1. निवेश आकर्षित करने के लिए भारत द्वारा किए गए प्रयास

विनिर्माण	
मेक इन इंडिया	➢ इसे 2014 में लॉन्च किया गया था। इसका उद्देश्य निवेश आकर्षित करने के लिए नियमों को आसान बनाना, **नवाचार को बढ़ावा देना, बौद्धिक संपदा (IP) की रक्षा करना, सर्वोत्तम श्रेणी की अवसंरचना का निर्माण करना** और भारत को विनिर्माण हब बनाना है। वर्तमान में, इसके तहत 27 क्षेत्रकों पर ध्यान दिया जा रहा है।
निवेशक सुविधा प्रकोष्ठ (Investor Facilitation Cell: IFC)	➢ यह मेक इन इंडिया अभियान के लिए समर्पित है। इसका गठन निवेशकों को विनियामकीय मंजूरी दिलाने में मदद करने; निवेश–पूर्व चरण (निवेश संभावना अध्ययन), **निवेश परियोजना क्रियान्वयन चरण और निवेश के बाद समर्थन जारी रखने जैसी** सहायता के लिए किया गया है।
सचिवों का अधिकार प्राप्त समूह (EGoS) और परियोजना विकास प्रकोष्ठ (PDC)	➢ इनका गठन निवेश योग्य परियोजनाओं की पहचान करने और फिर इन परियोजनाओं में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश **बढ़ाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के मध्य समन्वय में कार्य करने के लिए** किया गया है। ➢ **EGoS और PDC के रूप में नई व्यवस्था से 'मेक इन इंडिया' पहल को बहुत अधिक बढ़ावा मिलेगा** और इससे भारत को 2024–25 तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने में सहायता भी मिलेगी।
उत्पादन से सम्बद्ध प्रोत्साहन योजना (PLI)	➢ इसे 2020 में लॉन्च किया गया था। इसका उद्देश्य **मोबाइल, विद्युत घटकों, जैसे 14 प्रमुख क्षेत्रकों और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी में निवेश को आकर्षित करना; दक्षता को बढ़ाना; विनिर्माण और उत्पादन बढ़ाकर लागत को कम करना** तथा भारतीय कंपनियों तथा विनिर्माताओं को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है।
कराधान कानून (संशोधन) अधिनियम, 2019	➢ इसके जरिए **कॉर्पोरेट टैक्स की दरों को मौजूदा घरेलू कंपनियों के लिए 30% से कम करके 22% तथा नई घरेलू विनिर्माण कंपनियों के लिए 25% से कम करके 15%** कर दिया गया। इस कदम का उद्देश्य मेक इन इंडिया (विनिर्माण) में निवेश को आकर्षित करना तथा रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना है, ताकि अधिक–से–अधिक राजस्व प्राप्त हो सके।
चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम (Phased Manufacturing Programme: PMP)	➢ इसका उद्देश्य मोबाइल हैंडसेट, इलेक्ट्रिक वाहनों और उनकी असेम्बलीज़/ सब–असेम्बलीज़/सब–पार्ट्स के **स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देने** हेतु प्रोत्साहन प्रदान करके देश में बेहतर विनिर्माण परिवेश बनाना है। इससे **मांग को पूरा करने और निर्यात को बढ़ावा देने में** मदद मिलेगी।
भारी उद्योग मंत्रालय की "भारतीय पूंजीगत वस्तु क्षेत्रक के तहत प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि (Enhancement of Competitiveness in Indian Capital Goods Sector) – चरण 2"	➢ यह पहल **उद्योग 4.0 को अपनाने में सहूलियत** प्रदान करती है। साथ ही, इससे विनिर्माण क्षेत्रक में निवेश, प्रौद्योगिकियों के स्वदेशीकरण और साझा सेवा अवसंरचना/ परीक्षण सुविधाओं के निर्माण/ वृद्धि को बढ़ावा भी मिलेगा।
व्यापार सुविधा	
ईज ऑफ डूइंग बिजनेस (EoDB) में सुधार	➢ ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत देश के बारे में निवेशकों की सोच को बदलकर **विदेशी निवेश** को आकर्षित किया जाता है और प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करके **निर्यात को प्रोत्साहित** किया जाता है। भारत में इस दिशा में कई प्रयास किए गए हैं। ➢ जब मेक इन इंडिया कार्यक्रम शुरू किया गया था तब विश्व बैंक द्वारा जारी **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस इंडेक्स में भारत की रैंकिंग में सुधार का लक्ष्य** रखा गया था। हालांकि, 2021 में इस **इंडेक्स को जारी किया जाना बंद कर दिया गया**। इंडेक्स जारी किया जाना बंद होने से पहले **2020 में जारी इंडेक्स में भारत 190 देशों में 63वें स्थान पर था।**
जन विश्वास (प्रावधानों का संशोधन) अधिनियम, 2023	➢ यह **व्यक्तियों और व्यवसायों के लिए कई तरह के नियमों के पालन के बोझ को कम करने के लिए नियमों की संख्या कम** करता है। साथ ही यह जीवन यापन एवं व्यवसाय करना सहज बनाकर **विश्वास–आधारित गवर्नेंस** सुनिश्चित करता है।
इन्वेस्ट इंडिया (औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय)	➢ यह भारत की **राष्ट्रीय निवेश संवर्धन और सुविधा एजेंसी** है। इसे एक गैर–लाभकारी उद्यम के रूप में स्थापित किया गया है। ➢ यह **'मेक इन इंडिया'** पहल के तहत सभी निवेशकों को भारत में **अपना व्यवसाय स्थापित करने, संचालित करने और विस्तार करने हेतु सहूलियत** प्रदान करता है और उन्हें सशक्त बनाता है।

वित्त वर्ष 2019–25 के लिए राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP)	➢ यह विश्व स्तरीय अवसंरचना परियोजनाओं के कार्यान्वयन को आसान बनाने, **अवसंरचना में निवेश आकर्षित करने,** अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने, रोजगार के बेहतर अवसर पैदा करने और भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने पर केन्द्रित है।
राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन (National Monetisation Pipeline: NMP)	➢ इसका उद्देश्य सरकार की **ब्राउनफील्ड (पुराने) एसेट्स की वैल्यू का आकलन** कर निजी क्षेत्रक को इन एसेट्स/ परियोजनाओं का राजस्व–अधिकार ट्रांसफर करना (स्वामित्व नहीं) और इस तरह प्राप्त पूंजी का देश भर में **अवसंरचना के विकास में निवेश** करना है। ➢ इसका उद्देश्य वित्त वर्ष **2022 से 2025 तक** की चार साल की अवधि में केंद्र सरकार की **प्रमुख एसेट्स का मुद्रीकरण करके 6.0 लाख करोड़ रुपये जुटाना है।**
कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय की "इलेक्ट्रॉनिक रूप से कंपनी के निगमीकरण के लिए सरलीकृत प्रोफार्मा (SPICe+)" पहल	➢ यह पहल प्रक्रियाओं के बोझ को कम करके **भारत में व्यवसाय शुरू करने में लगने वाले समय और लागत को कम करती है।** यह सभी नई कंपनियों के निगमीकरण (पंजीकरण) पर लागू होगा।
राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) नीति 2016	➢ यह नीति **अन्वेषकों (इन्वेंटर्स), कलाकारों और रचनाकारों की उपलब्धियों/ खोजों के लिए मजबूत संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान करके नवाचार, उद्यमशीलता एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहित** करती है। यह कर संबंधी छूट प्रदान करके अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देती है। ➢ विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) द्वारा जारी **ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स 2023** की रैंकिंग में 132 देशों में **भारत 40वें स्थान** पर है।
राष्ट्रीय निवेश और अवसंरचना कोष (National Investment and Infrastructure Fund: NIIF)	➢ **यह अवसंरचना क्षेत्रक में निवेश** को बढ़ावा देने वाला **भारत का पहला सॉवरेन वेल्थ फंड** है। ➢ इसे **एक ट्रस्ट** के रूप में **भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI)** के यहां पंजीकृत कराया गया है। ➢ वर्तमान में, NIIF मास्टर फंड, फंड ऑफ फंड्स, स्ट्रैटेजिक अपॉर्चुनिटीज फंड, इंडिया–जापान फंड जैसे फंड्स के जरिए **4.9 बिलियन डॉलर से अधिक की एसेट्स का प्रबंधन** करता है।
विदेशी निवेश	
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)	➢ विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने **निवेशक–अनुकूल नीति** बनाई है। अधिकांश क्षेत्रकों में स्वचालित मार्ग (ऑटोमेटिक रूट) से **100% FDI** की अनुमति है। ➢ वित्त वर्ष 2022–23 के दौरान **सबसे अधिक FDI इक्विटी प्राप्त करने वाले शीर्ष 5 राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश हैं;** महाराष्ट्र (29%), कर्नाटक (24%), गुजरात (17%), दिल्ली (13%) और तमिलनाडु (5%)।
विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा/ FEMA)	➢ फेमा का उद्देश्य **विदेश व्यापार को आसान बनाना, विदेशी निवेश को आकर्षित करना और विदेशी मुद्रा बाजार में स्थिरता बनाए रखना** है। ➢ 2022 में, सरकार ने भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) में स्वचालित मार्ग से **20% FDI की अनुमति देने के लिए FEMA कानून में संशोधन** किया है।
द्विपक्षीय निवेश संधियां (Bilateral Investment Treaties: BIT)	➢ BITs किसी **एक देश के नागरिकों और कंपनियों द्वारा किसी दूसरे देश में निजी निवेश करने संबंधी** नियम और शर्तों को तय करने वाले अंतर्राष्ट्रीय समझौते हैं। ➢ भारत ने बेलारूस सहित संयुक्त अरब अमीरात, लिथुआनिया जैसे कई देशों के साथ BIT पर हस्ताक्षर किए हैं।
वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय का "उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT)"	➢ यह विभाग नई और भविष्य की **प्रौद्योगिकी में निवेश की सुविधा, FDI में तेजी लाने और उद्योगों और व्यापार के संतुलित विकास का समर्थन** करके देश के औद्योगिक विकास को बढ़ावा देता है।
सरकार द्वारा समर्थन	
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की "राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली (NSWS)"	➢ यह निवेश से संबंधित **विनियामकीय मंजूरी प्राप्त करने और सेवाएं चाहने वाले व्यवसायियों के लिए वन–स्टॉप डिजिटल प्लेटफॉर्म** है। यह व्यवसाय करने वाले लोगों को अपना व्यवसाय शुरू करने या उसे चलाने के लिए आवश्यक मंजूरियों की पहचान करने और आवेदन करने में मदद करेगा।

निवेश निकासी सेल (ICC)	➢ वर्ष 2020–21 के बजट में निवेशकों को **"एंड–टू–एंड" सुविधा और समर्थन** प्रदान करने की घोषणा की गई है। इसमें निवेश पूर्व सलाह, भूमि बैंकों से संबंधित जानकारी प्रदान करना और केंद्र और राज्य स्तर पर मंजूरी की सुविधा प्रदान करना शामिल हैं।
भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC) 2016, {Insolvency and Bankruptcy Code (IBC) 2016}	➢ इस संहिता ने भारत में **विदेशी निवेश को आकर्षित करने** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। **पारदर्शी और कुशल समाधान प्रक्रिया** की वजह से संकट वाली एसेट्स में निवेश करने के इच्छुक अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों में विश्वास पैदा किया है।
स्टार्ट–अप	
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना	➢ इसके तहत बैंकों, गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs), माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं (MFIs) जैसे लास्ट माइल (प्रायः जगह उपलब्ध) वित्तीय संस्थानों के माध्यम से **गैर–कॉर्पोरेट लघु व्यवसाय क्षेत्र को 10 लाख रुपये तक का वित्त पोषण** प्रदान किया जाता है।
स्टार्टअप्स के लिए फंड ऑफ फंड्स (FFS) योजना	➢ सरकार ने **स्टार्टअप्स की वित्त पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 10,000 करोड़** रुपये के कोष के साथ FFS की स्थापना की है। ➢ **DPIIT** एक **निगरानी एजेंसी** है। **भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) FFS के लिए परिचालन (ऑपरेटिंग) एजेंसी है।**
3 वर्ष तक आयकर में छूट	➢ **1 अप्रैल, 2016 को या उसके बाद** निगमित (पंजीकृत) स्टार्टअप आयकर छूट के लिए आवेदन कर सकते हैं। ➢ मान्यता प्राप्त स्टार्टअप जिन्हें **अंतर–मंत्रालयी बोर्ड प्रमाण–पत्र** प्रदान किया जाता है, उन्हें निगमित होने के बाद से 10 वर्षों में से लगातार 3 वर्षों की अवधि के लिए **आयकर से छूट दी जाती है।**
स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम (SISFS)	➢ यह स्कीम, प्रोटोटाइप विकास, उत्पाद परीक्षण, बाजार प्रवेश और व्यावसायीकरण के प्रमाण के लिए **स्टार्टअप को वित्तीय सहायता** प्रदान करती है।

बॉक्स 4.1. नैतिक निवेश का उदय

नैतिक निवेश (Ethical investing) एक प्रकार की निवेश रणनीति है। इसके तहत एक **निवेशक धार्मिक, सामाजिक, नैतिक या सामाजिक मूल्यों जैसे नैतिक कोड, और संभावित वित्तीय रिटर्न के आधार पर निवेश** को प्राथमिकता देता है। भारत में भी नैतिक निवेश को बढ़ावा मिल रहा है। इनकी वजहें हैं; **विश्व के ट्रेंड को अपनाना, कोविड–19 महामारी के प्रभाव, सोशल मीडिया के कारण जागरूकता तथा** निवेश का **कृषि, ऊर्जा** जैसे क्षेत्रकों में विस्तार।

नैतिक निवेश के प्रकार

- ➢ **सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेश (SRI)**: इसमें एक निवेशक को **वित्तीय रिटर्न तो प्राप्त होते ही हैं, सामाजिक बदलाव के रूप में रिटर्न भी प्राप्त** होता है। SRI के तहत सट्टेबाजी, आग्नेयास्त्र (फायर–आर्म्स), तंबाकू, शराब जैसे **विवादास्पद क्षेत्रों में निवेश करने से बचा** जाता है जबकि सौर ऊर्जा कंपनियों की तरह **सकारात्मक प्रभाव डालने वाली कंपनियों में निवेश** किया जाता है।
- ➢ **पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस (ESG) निवेश**: इसके तहत कोई निवेशक अपने निवेश के वित्तीय रिटर्न का आकलन करने के लिए **ESG कारकों** तथा इनके समग्र प्रभाव को ध्यान में रखता है (इन्फोग्राफिक देखिए)।
- ➢ **विश्वास (पंथ)–आधारित फंड्स**: ये फंड्स **केवल उन स्टॉक्स में निवेश करते हैं जो धार्मिक मूल्यों और आदर्शों का पालन करते हैं।** ये उन उन निवेश इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश नहीं करते हैं जो उनकी श्रेणी में फिट नहीं होते हैं।

नैतिक निवेश के लाभ और चुनौतियां

लाभ

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देता है	सतत विकास में योगदान देता है	निवेश को व्यक्तिगत मूल्यों से जोड़ता है	सकारात्मक वित्तीय रिटर्न प्राप्ति की संभावना

चुनौतियां

मानकीकरण का अभाव	सीमित निवेश विकल्प	नैतिक और वित्तीय रिटर्न में संतुलन

किन कारकों पर विचार किया जाता है?

पर्यावरण	सामाजिक	गवर्नेंस
• कार्बन उत्सर्जन	• श्रम मानक	• कार्यकारी के वेतन
• अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाएं	• मनवाधिकार	• कंपनी के बोर्ड की विविधता
• संसाधन का उपयोग	• समुदाय संबंध	• पारदर्शिता

5. भारत में निवेश आकर्षित करने में कौन–कौन सी चुनौतियां मौजूद हैं?

भारत में निवेश के माहौल में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। इससे यह वैश्विक निवेशकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बन गया है। भारत में 2015 के बाद से विदेशी निवेश में 85.09 प्रतिशत की महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। DPIIT के मुताबिक वित्त वर्ष 2022 में भारत में 83.57 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश हुआ जो एक वर्ष में अब तक का सर्वाधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश है। हालांकि, भारत का निवेश परिदृश्य आकर्षक बना हुआ है, फिर भी इसमें मौजूद कुछ चुनौतियां निवेशकों के लिए चिंता का कारण बनी हुई है। ये चुनौतियां निम्नलिखित हैं:

- **जटिल कर संरचनाएं:** नीतियों में बार–बार होने वाले बदलाव और उन्हें सही से लागू नहीं करने से निवेशकों के मन में अनिश्चितताएं पैदा होती हैं।
  - उदाहरण के लिए, कर संरचना में बार–बार बदलाव होने से कुछ क्षेत्रकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसका एक उदाहरण गेमिंग उद्योग है जिन्हें अपने सकल राजस्व पर 28% GST चुकाना पड़ता है।
- **निवेश का कुछ विशेष क्षेत्रों तक सीमित या सकेंद्रित हो जाना:** अधिकतर निवेश विशेष आर्थिक क्षेत्र, निर्यात संवर्धन क्षेत्र और गुजरात में हालिया मेगा ग्लोबल फाइनेंशियल सेंटर जैसे आर्थिक केंद्रों में होते हैं। निवेश के इस **असमान वितरण से देश का समग्र विकास नहीं हो पाता है।**
  - इसके अलावा, **राज्यों के बीच आर्थिक असमानता** भी मौजूद है। **भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद में शीर्ष 5 राज्यों का योगदान लगभग** 50% है। ये राज्य हैं– महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, गुजरात और कर्नाटक। इस असमानता से यही पता चलता है कि संसाधनों का दक्षता से उपयोग नहीं किया गया है।
- **अवसंरचना से संबंधित बाधाएं:** अनेक सुधारों के बावजूद, भारत अभी भी अवसंरचना की कमी से संबंधित चुनौतियों का सामना कर रहा है। ये चुनौतियां मुख्यतः परिवहन, ऊर्जा और लॉजिस्टिक जैसे क्षेत्रकों में अधिक हैं।
  - उदाहरण के लिए, अमेरिका स्थित ऑटो निर्माता कंपनी फोर्ड और बाइक निर्माता हार्ले–डेविडसन ने हाल के वर्षों में भारत में अपना कारोबार बंद कर दिया है। इनके अलावा, केयर्न एनर्जी, डायची सैंक्यो और कैरेफोर जैसी कंपनियों ने भी भारत में अपना परिचालन बंद कर दिया है।
- **लॉजिस्टिक्स: सड़क परिवहन पर अत्यधिक निर्भरता, मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी की कमी और खराब बंदरगाह अवसंरचना आदि के कारण लॉजिस्टिक्स की लागत अधिक** बनी हुई है। इसके अलावा, कम कीमत वाले उत्पादों या थोक वस्तुओं की आपूर्ति करने वाले कृषि क्षेत्रक के लिए लॉजिस्टिक लागत अधिक है।
- **कौशल की कमी:** युवा आबादी की बड़ी संख्या होने के बावजूद, उद्योगों में कुशल कर्मियों की कमी से संबंधित चुनौतियां बनी हुई हैं। इसके कारण **बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए किसी अन्य जगह से भारत में अपना व्यवसाय लाने में बाधा** उत्पन्न होती है। इससे **निवेश का आना भी बाधित** होता है।
  - एस्पायरिंग माइंड्स द्वारा जारी की गई 'इंजीनियरों के लिए राष्ट्रीय रोजगार रिपोर्ट 2019' से पता चलता है कि भारत में 80% **से अधिक इंजीनियर्स ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में कोई भी रोजगार प्राप्त करने के लिए योग्य** नहीं हैं।
- **श्रम कानून:** श्रम कानूनों की जटिलता और श्रम बाजार में उदारता से जुड़ी चुनौतियां निवेशकों के लिए चिंता का विषय हो सकती हैं। नौकरी पर रखने और नौकरी से निकालने (एंट्री–एग्जिट पॉलिसी) से जुड़े कानूनों में उदारता लाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही श्रमिकों के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए श्रम कानूनों में सुधार को लेकर अक्सर बहस होती रहती है।
- **भू–राजनीतिक कारक: यूक्रेन में युद्ध; फूड, फ्यूल और फाइनेंस का ट्रिपल क्राइसिस;** कोविड–19 महामारी और जलवायु संकट के कारण विशेष रूप से विकासशील देशों में तनाव बढ़ रहा है। इन कारणों से भी निवेश में गिरावट आ रही है।
  - UNCTAD के 'इन्वेस्टमेंट ट्रेंड मॉनिटर' के अनुसार, वैश्विक स्तर पर 2020 में FDI में COVID-19 महामारी के कारण भारी गिरावट (42%) देखी गई थी। 2019 में 1.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश हुआ था जो 2020 में घटकर 859 बिलियन अमेरिकी डॉलर रह गया।

6. निवेश आकर्षित करने में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए कौन–कौन से उपाय किए जा सकते हैं?

किसी भी देश या क्षेत्र में निवेश को बाधित करने वाली कई चुनौतियों के बावजूद, नौकरशाही संबंधी बाधाओं को कम करने, प्रोत्साहन प्रदान करने, अवसंरचना में निवेश करने जैसे कई उपाय किए जा सकते हैं। ये उपाय निम्नलिखित हो सकते हैं–

- **मुक्त बाजार सुनिश्चित करना:** FDI पर कई तरह के प्रतिबंधों या सीमाओं को कम करने और सभी प्रकार की विदेशी या घरेलू कंपनियों के लिए खुली, **पारदर्शी और भरोसेमंद व्यवस्था बनाने** की आवश्यकता है। अपेक्षाकृत लचीले श्रम बाजार का निर्माण और बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) की सुरक्षा सुनिश्चित करके देश में निवेश को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- **अवसंरचना का निर्माण:** उच्च गुणवत्ता वाली अवसंरचना के निर्माण, **मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी, ऊर्जा की पर्याप्त और निरंतर आपूर्ति, कुशल कार्यबल** आदि सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इसे विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए निवेशकों के सहयोग से तैयार की गई सार्वजनिक–निजी भागीदारी के माध्यम से सुनिश्चित किया जा सकता है।
- **कुशल कार्यबल विकसित करना: विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए** कुशल कार्यबल का होना बहुत जरूरी है। ऐसा इसलिए क्योंकि निवेशकों को अपने व्यवसाय का संचालन करने के लिए प्रतिभावान कार्यबल की तलाश रहती है। इसलिए, बाजार की मांग के अनुसार कौशल विकास के लिए डिज़ाइन की गई **शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर सरकारी खर्च बढ़ाने** से देश में निवेश को और बढ़ावा मिल सकता है।
- **देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना: द्विपक्षीय और बहुपक्षीय समझौतों** के माध्यम से मजबूत अंतर्राष्ट्रीय संबंध बनाना, विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए **विश्व बैंक की विदेशी निवेश सलाहकार सेवा (FIAS) जैसे प्लेटफॉर्म्स** का उपयोग करना चाहिए। यह **नए बाजारों के साथ–साथ प्रौद्योगिकी तक पहुंच भी प्रदान** कर सकता है, जिससे आर्थिक विकास को गति मिल सकती है।
- **आर्थिक प्रोत्साहन और कर छूट देना:** सरकारें निवेश को आकर्षित करने के लिए कई प्रकार के प्रोत्साहन और कर छूट की पेशकश कर सकती हैं। इसके तहत कुछ समय के लिए कर चुकाने से छूट (Tax Holidays), कम टैरिफ दर और कुछ करों से छूट, अनुदान और सब्सिडी जैसे प्रोत्साहन प्रदान किए जा सकते हैं। इससे विशिष्ट उद्योगों या क्षेत्रकों में निवेश को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

- **समन्वयः अंतर–मंत्रालयी परिषदों, कार्य–बलों और कार्य–समूहों की स्थापना** करके नीति निर्माण और इनके कार्यान्वयन के स्तरों पर समन्वय को मजबूत किया जा सकता है। प्रभावी बहुस्तरीय गवर्नेंस प्रणाली स्थापित करके तथा उद्योग, शिक्षा जगत के हितधारकों को शामिल करके कार्यान्वयन संबंधी चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है।
- **लिंकेज को मजबूत करनाः** स्थानीय व्यवसायों और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए, **व्यावसायिक लिंकेज तथा क्रॉस–सेक्टोरल इंटरैक्शन की सुविधा प्रदान करने वाले व्यापक क्लस्टर विकास कार्यक्रमों** को लागू किया जाना चाहिए। इसके अलावा रणनीतिक साझेदारी और घरेलू उद्यमियों के साथ सहयोग करके स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के साथ विदेशी निवेशकों के एकीकरण को बढ़ावा देना चाहिए। इसके लिए निवेश सुविधा और देखभाल सेवाएं प्रदान करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।
- **निवेश को बढ़ावा देने वाली रणनीतियांः** निवेश को प्रोत्साहन देने वाली ऐसी रणनीतियों को लागू किया जाना चाहिए, जो उत्पादकता बढ़ाने के उपायों और ज्ञान–आधारित निवेश की पहचान करे, उन्हें प्राथमिकता दे और निवेश आकर्षित करे। इन रणनीतियों में खुफिया जानकारी एकत्र करने (उदाहरण के लिए बाजार अध्ययन); सेक्टर–विशिष्ट आयोजनों (उदाहरण के लिए व्यापार मेले का आयोजन, दूसरे देशों में स्थित देश अपने मिशन यानी दूतावासों/वाणिज्य दूतावासों); निवेशकों से सक्रिय संपर्क शामिल हैं।

सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के लिए निवेश

	लघु अवधि	मध्यम अवधि	दीर्घकालिक
	तत्काल कदम उठाना	कोविड–19 महामारी के बाद अर्थव्यवस्था को वापस गति देने के चरण के दौरान मांग का समर्थन करना	"बिल्डिंग बैक बेटर" में निवेश
आर्थिक और सामाजिक प्रभाव	वित्त और मांग में होने वाले उतार–चढ़ाव के कारण कंपनियों को नुकसान हो सकता है साथ ही इससे रोजगार के अवसर भी कम हो सकते हैं, आय में भी कमी आ सकती है, सार्वजनिक और निजी सेवाओं के कार्यों में भी कमी आ सकती है।	कंपनियों का दिवालियापन, आर्थिक गतिविधियों में कमी आने से आय में कमी आना, सबसे कमजोर वर्गों के लिए संकट आना।	ऋण का अधिक बोझ होने से नए निवेश में कमी आती है। मांग में कमी के कारण सभी क्षेत्रकों में स्थायी रूप से कम वृद्धि देखने को मिलती है।
SDGs के प्रभावित टार्गेट्स	उद्योग (9) स्वास्थ्य देखभाल (3) भूखमरी (2) लैंगिक समानता (5)	गरीबी (1) शिक्षा (4) रोजगार (8) असमानताएं (10) जिम्मेदारीपूर्ण उपभोग (12)	अवसंरचना (9, 11) ऊर्जा (7) जल (6) जलवायु (13) संधारणीय शहर (11) जैव विविधता (14, 15) गवर्नेंस (16)

निष्कर्ष

भारत में विदेशी निवेश को बढ़ावा देना और निवेश आकर्षित करना देश की आर्थिक प्रगति और उन्नति के लिए महत्वपूर्ण है। भारत ने निवेश–अनुकूल माहौल बनाने तथा अनुकूल कारोबारी माहौल को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाओं की घोषणा की है और नीतियों को सफलतापूर्वक लागू किया है। कॉर्पोरेट कर की दर में कमी करने और FDI पर अलग–अलग प्रकार के प्रतिबंधों में कमी करने जैसे उपायों से भारत में 2025 तक सालाना 120–160 बिलियन अमेरिकी डॉलर का FDI आ सकता है। हालांकि, विदेशी निवेश का आना जारी रखने और उसे बढ़ावा देने के लिए सुधारों को लागू करने, स्थिरता को बढ़ावा देने और किसी भी अन्य समस्या का समाधान करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। ऐसा करके, भारत वैश्विक निवेश के लिए आकर्षक गंतव्य (देश) के रूप में अपनी स्थिति को बनाए रख सकता है। इससे दीर्घकालिक आर्थिक समृद्धि प्राप्त की जा सकती है।

टॉपिक: एक नज़र में | भारत में निवेश का परिदृश्य

नई पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण पर हुए व्यय को निवेश कहा जाता है। इस तरह की पूंजीगत परिसंपत्तियों में भवन, मशीनरी, कच्चा माल, उपकरण आदि शामिल हैं। **इन परिसंपत्तियों पर व्यय करने से अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता में वृद्धि** होती है। निवेश के विभिन्न प्रकारों में **फिक्स्ड रेट (बॉण्ड्स), मार्केट लिंक्ड (स्टॉक, म्यूचुअल फंड) और वैकल्पिक निवेश इंस्ट्रूमेंट्स (कमोडिटी, रियल स्टेट)** शामिल हैं।

भारत, निवेश के लिए पसंदीदा गंतव्य (देश) क्यों है?

- **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)** और **विश्व बैंक** ने अनुमान लगाया है कि भारत 2023–24 में **सबसे तेजी से वृद्धि करने वाली अर्थव्यवस्था होगी।**
- भारत सामरिक रूप से महत्वपूर्ण व्यापार मार्गों **(मलक्का जलडमरूमध्य, होर्मुज) के केंद्र में अवस्थित है। साथ ही, दक्षिण–पूर्व एशिया और मध्य–पूर्व के बाजार भारत से नजदीक हैं।**
- भारत में **कुशल तथा शिक्षित पेशेवरों का विशाल एवं व्यापक समूह** मौजूद है, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और विज्ञान जैसे क्षेत्रकों में।
- **निवेशक अनुकूल नीति,** जैसे– सिंगल विंडो क्लीयरेंस, उदार एंट्री और एग्जिट नीति तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) मानदंडों को सरल करना शामिल हैं।
- **परिवहन, ऊर्जा और विनिर्माण आदि क्षेत्रक के अवसंरचना विकास में निवेश** बढ़ा रहा है।
- वैश्विक कंपनियां **सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, कस्टमर सर्विस जैसी सेवाएं भारत को आउटसोर्स कर दे रही हैं।**
- राजनीतिक स्थिरता तथा **G-20 सम्मेलन को सफलतापूर्वक आयोजित करने से निवेश के लिए बेहतर माहौल** तैयार हुआ है।
- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की हिस्सेदारी (2030 तक 500GW) भी बढ़ रही है, जिससे आर्थिक संवृद्धि हो रही है।
- भारत की विशाल युवा आबादी (लगभग 66 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम) **विदेशी निवेशकों को आकर्षित** करती है।
- भारत निवेश आकर्षित करने वाले **विविध प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न देश है। इनमें खनिज संसाधन से समृद्ध छोटा नागपुर का पठार** शामिल हैं।

निवेश को आकर्षित करने के लिए क्या उपाय किए गए हैं?

- **विनिर्माण: मेक इन इंडिया;** निवेशक सुविधा प्रकोष्ठ; सचिवों का अधिकार प्राप्त समूह (EGoS) और परियोजना विकास प्रकोष्ठ (PDCs); **उत्पादन से सम्बद्ध प्रोत्साहन योजना (PLI); कराधान कानून (संशोधन) अधिनियम, 2019 आदि।**
- **व्यापार सुविधा:** ईज ऑफ डूइंग बिजनेस (EoDB) में सुधार; जन विश्वास (प्रावधानों का संशोधन) अधिनियम, 2022; इन्वेस्ट इंडिया; वित्त वर्ष 2019–25 के लिए राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP); "इलेक्ट्रॉनिक रूप से कंपनी के निगमीकरण के लिए सरलीकृत प्रोफार्मा (SPICE+)" पहल।
- **विदेशी निवेश:** प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI); **विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा/FEMA); द्विपक्षीय निवेश संधियां।**
- **सरकार द्वारा समर्थन:** वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की **राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली (NSWS); भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC), 2016; इन्वेस्टमेंट क्लीयरेंस सेल।**
- **स्टार्ट–अप: प्रधानमंत्री मुद्रा योजना;** स्टार्टअप्स के लिए फंड ऑफ फंड्स (FFS) योजना; **3 वर्ष तक आयकर में छूट;** स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम (SISFS) आदि।

भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था पर निवेश का क्या प्रभाव पड़ता है?

- **आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होती है,** जिससे सरकार को **अधिक कर राजस्व प्राप्त** होता है।
- विकसित देशों से विकासशील देशों में नई प्रौद्योगिकियां आती हैं।
- **बाजार में नए भागीदारों/ उद्यमों की संवृद्धि** को बढ़ावा मिलता है और घरेलू प्रतिस्पर्धा भी प्रेरित होती है।
- निवेश विदेशी व्यापार को बढ़ावा देकर वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण में मदद करता है। निवेश से **देशों के भुगतान संतुलन में भी सुधार** होता है।
- **अवसंरचना संबंधी विकास से** उत्पादकता और नवाचार बढ़ते हैं।
- **विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि से आर्थिक अनिश्चितताओं और संकट की स्थिति में सुरक्षा** मिलती है। साथ ही, इससे राष्ट्रीय मुद्रा को स्थिर रखने में भी मदद मिलती है।
- निवेश के बढ़ने से आबादी के जीवन स्तर में सुधार होता है। इसमें **शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल तथा अन्य सेवाएं** शामिल हैं।

भारत में निवेश आकर्षित करने में कौन–कौन सी चुनौतियां मौजूद हैं?

- **जटिल कर संरचनाएं:** कर संरचना में बार–बार बदलाव होने से कुछ क्षेत्रकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसका एक उदाहरण गेमिंग उद्योग है जिन्हें अपने सकल राजस्व पर 28% GST चुकाना पड़ता है।
- अधिकतर निवेश विशेष आर्थिक क्षेत्र, निर्यात संवर्धन क्षेत्र और गुजरात में हालिया मेगा ग्लोबल फाइनेंशियल सेंटर जैसे **आर्थिक केंद्रों में होते हैं।** निवेश के इस **असमान वितरण से देश का समग्र विकास नहीं हो पाता है।**
- **अभी भी** मुख्यतः परिवहन, ऊर्जा और लॉजिस्टिक जैसे क्षेत्रकों में **अवसंरचना की कमी** है।
- **उद्योगों में कुशल कर्मियों की कमी के कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए किसी अन्य जगह से भारत में अपना व्यवसाय लाने में बाधा** उत्पन्न होती है।
- **श्रम कानूनों की जटिलता** और श्रम बाजार में उदारता से जुड़ी चुनौतियां निवेशकों के लिए चिंता का विषय हो सकती हैं।
- **भू–राजनीतिक कारक: यूक्रेन में युद्ध; फूड, फ्यूल और फाइनेंस का ट्रिपल क्राइसिस;** कोविड–19 महामारी और जलवायु संकट के कारण निवेश में गिरावट आ रही है।

आगे की राह

- FDI पर कई तरह के प्रतिबंधों या सीमाओं को कम करने और सभी प्रकार की विदेशी या घरेलू कंपनियों के लिए खुली, **पारदर्शी और भरोसेमंद व्यवस्था बनाने** की आवश्यकता है। अपेक्षाकृत लचीले श्रम बाजार का निर्माण और बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) की सुरक्षा सुनिश्चित करके देश में निवेश को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- उच्च गुणवत्ता वाली अवसंरचना के निर्माण, **मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी, ऊर्जा की पर्याप्त और निरंतर आपूर्ति, कुशल कार्यबल** आदि सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।
- **विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए** कुशल कार्यबल का होना बहुत जरूरी है। ऐसा इसलिए क्योंकि निवेशकों को अपने व्यवसाय का संचालन करने के लिए प्रतिभावान कार्यबल की तलाश रहती है।
- **द्विपक्षीय और बहुपक्षीय समझौतों** के जरिए मजबूत अंतर्राष्ट्रीय संबंध बनाना, विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए विश्व बैंक की विदेशी निवेश सलाहकार सेवा (FIAS) जैसे प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करना चाहिए।
- सरकारें निवेश को आकर्षित करने के लिए कई प्रकार के प्रोत्साहन और कर छूट की पेशकश कर सकती हैं, जैसे– कुछ समय के लिए कर चुकाने से छूट (Tax Holidays), कम टैरिफ दर।

चित्र, बॉक्स और टेबल

चित्र 1.1. वैकल्पिक निवेश के मुख्य प्रकार ---- 3
चित्र 1.2. निवेश इकोसिस्टम ---- 3
चित्र 3.1. निवेश के प्रभाव ---- 5
चित्र 4.1. नैतिक निवेश के लाभ और चुनौतियां ---- 8
चित्र 6.1. सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के लिए निवेश ---- 10

बॉक्स 1.1. प्रेरित निवेश और स्वायत्त निवेश के बीच अंत ---- 2
बॉक्स 3.1. एक छोटी सी वार्ता! इम्पैक्ट इंवेस्टमेंट या प्रभाव निवेश ---- 5
बॉक्स 4.1. नैतिक निवेश का उदय ---- 8

टेबल 4.1. निवेश आकर्षित करने के लिए भारत द्वारा किए गए प्रयास ---- 6

1 AIR Ishita Kishore
2 AIR Garima Lohia
3 AIR Uma Harathi N
39 in Top 50 Selection in CSE 2022

8 in Top 10 Selection in CSE 2021
2 AIR ANKITA AGARWAL
3 AIR GAMINI SINGLA
4 AIR AISHWARYA VERMA
5 AIR UTKARSH DWIVEDI
6 AIR YAKSH CHAUDHARY
7 AIR SAMYAK S JAIN
8 AIR ISHITA RATHI
9 AIR PREETAM KUMAR

DELHI
HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1 Floor,Near Gate 6, Karol Bagh Metro Station

Mukherjee Nagar Centre
635, Opp. Signature View Apartments, Banda Bahadur Marg, Mukherjee Nagar

For Detailed Enquiry,
Please Call: +91 8468022022, +91 9019066066

1 AIR SHUBHAM KUMAR
CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

AHMEDABAD BHOPAL CHANDIGARH GUWAHATI HYDERABAD JAIPUR JODHPUR LUCKNOW PRAYAGRAJ PUNE RANCHI SIKAR